वृद्धों एवं दिव्यांगों की समस्या

डा.अलका भार्मा
सहायक प्राध्यापक, समाजभाास्त्र विभाग
आईएफटीएम विवविद्यालय मुरादाबाद

भाोधसार (Abstract)

इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्राचीन काल में वृद्धों की स्थिति अत्यन्त उन्नत एवं सम्भावनीय रही है। उनका समाज एवं परिवार में एक अलग ही वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों में हुआ करती थी। परिवार का कोई भी फैसला उनके सलाह व म"ाविरे के आधार पर लिया जाता था। वे परिवार के मुखिया होते थे, जो परिवार के सदस्यों को एक सूत्र में बांधें रखते थे। जिसके कारण संयुक्त परिवार का अस्तित्व हुआ करता था, परन्तु आज भौतिकवादी युग के कारण वृद्धों की संख्या बढ़ती जा रही है और उनकी समाज में उपयोगिता कम होती जा रही है। अतः जिस प्रकार वृद्धों की समस्याएं समाज में व्याप्त है, वहीं दिव्यांगों की भी विभिन्न समस्याएं विद्यमान है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सन् 2015 में दिव्यांगों को यह नाम दिया, जिसे 2015 से पहले पूर्ण विकलांग कहा जाता था। प्रधानमंत्री ने कहा विकलांग भाब्द की जगह दिव्यांग भाब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। तभी से ये दिव्यांग कहलाए जाने लगे। आज हमारे समाज में वृद्धों एवं दिव्यांगों की विभिन्न समस्याएँ व्याप्त हैं। जिसे दूर करने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। इस अध्ययन में वृद्धों एवं दिव्यांगों की समस्याओं एवं उनके निवारण के उपायों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में वृद्धों एवं दिव्यांगों की संख्या पायी जाती है। इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है। प्राचीन समाज में वृद्धों की स्थिति अत्यन्त उन्नत एवं सम्मानीय रही है। उनका समाज में एक अलग ही वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों में हुआ करती थी। परिवार का कोई भी फैसला लेना होता था तो उनके सलाह म"ाविरे के आधार पर लिया जाता था। वे परिवार के मुखिया होते थे जो परिवार को एक सूत्र में बांधे रखते थे। जिसके कारण संयुक्त परिवार हुआ करते थे, परन्तु आज भौतिकवादी युग के कारण वृद्धां की समस्या बढ़ती जा रही हैं और उनकी समाज में उपयोगिता कम होती जा रही है। अतः जिस प्रकार वृद्धों की समस्यायें समाज में व्याप्त है, वहीं दिव्यांगों की भी समस्यायें समाज में व्यापक रूप से व्याप्त हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सन् 2015 में 27 दिसम्बर को अपने रेड़ियो सम्बोधन में ' मन की बात में ' कहा था कि ''भारीरिक रूप से अ"ाक्त लोगों के पास एक दिव्य क्षमता है उनके लिए विकलांग भाब्द के जगह दिव्यांग भाब्द इस्तेमाल किया जाना चाहिए।'' तभी से यह दिव्यांग कहलाने लगे। आज हमारे समाज में वृद्धों एवं दिव्यांगों की विभिन्न समस्यायें व्याप्त हैं। जिसे दूर करने हेतु सरकार ने विभिन्न योजनाएं बनाई हैं। उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास भी किया जा रहा है।

वृद्धों की समस्यायें

आज हमारे दे"ा में वृद्धों की समस्या का बढ़ना पि"चमीकरण, भौतिकवाद का विकास आदि कारणों की देन है। जैसे–जैसे इनका विकास हुआ वैसे–वैसे वृद्ध उपेक्षा का ि"ाकार होकर समस्याओं से घिर गये हैं। वृद्धों की समस्याओं के निम्न कारण हैं–

1.संयुक्त परिवार का विघटन

सयुक्त परिवार का आपस में क्ले"ा, घुटन भरा जीवन एवं युवा पीढ़ी का नगरों की ओर प्रस्थान तथा बुजर्गों के प्रति उदासीनता ने हमारे समाज में गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी हैं।

2.भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि

औद्योगिकीकरण एवं पि"चमीकरण के कारण आज की युवा पीढ़ी के रहन – सहन एवं जीवन भौली में बदलाव तेजी से देखा जा रहा है। व्यक्ति इतना व्यस्त हो गया है कि अपने परिवार के सदस्यों के साथ बैठना अब आव"यक नहीं समझते। जिसकी सबसे बड़ी पीड़ा वुजुर्गों को ही झलनी पड़ती है।

3.नई पुरानी पीढ़ी के बीच फासला

इसे पीढ़ी अंतराल भी कहा जाता है। हालांकि नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से विरासत में न केवल जीवन भौली वरन् जीवन द"ान भी पाती है। फिर भी न जाने क्यूं पुरानी पीढ़ी उसे बोझ सी लगती है। कारण यह है कि दोनों एक दूसरे से सहमत नहीं है।

4.धन का महत्व

आज के युग में धन का महत्व बढ़ने के कारण बच्चे बड़े होकर माता–पिता को तभी अपनाते है। जब तक उनके पास धन होता है। धन समाप्त होने के बाद वे बोझ बनकर रह जाते हैं।

5.व्यक्तिवादिता एवं व्यक्तिगत स्वार्थ

आज के युग में नई पीढ़ी स्वार्थी हो रही है। वह अपने परिवार के वृद्धों की देखभाल तभी करते हैं जब उनसे धन दौलत संपति प्राप्त हो सकती है। इनके अंदर वृद्धों के प्रति सेवा दया और लगाव कम होता जा रहा है क्योंकि वे वृद्धों की सेवा कर्तव्य को अपनी स्वतन्त्रता में बाधक मानते हैं।

6.भाारीरिक समस्या

भारीरिक समस्या के अन्तर्गत भारीर ि"ाथिल होने लगता है जिससे अनेक समस्यायें होती है। जैसे भारीर में झुर्रियां पड़ना, चिड़चिड़ापन होना आदि।

7.मानसिक समस्या

मानसिक समस्या के अन्तर्गत इस अवस्था में मानसिक तनाव की स्थिति बनने लगती है। पति–पत्नी में से किसी एक की मृत्यु होने पर हीन भावना की वृद्धि होती है तथा आत्मवि"वास की कमी होने लगती है जिससे मानसिक विकृत, अकेलापन जैसे दोश उत्पन्न हो जाते हैं।

8.स्वास्थ्य की समस्या

उम्र के अन्तिम पड़ाव पर व्यक्ति में भाारीरिक व मानसिक सभी प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। वृद्धों की सबसे बड़ी समस्या स्वास्थ्य सम्बन्धी होती है क्योकि जब व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो जाता है तब वह स्वयं के लिए भी बोझ लगने लगता है और इस भौतिकवादी समय में लम्बे समय तक किसी की देखभाल करने के लिए समय ही नही है।

9. आर्थिक समस्या

आर्थिक समस्या के अन्तर्गत वृद्धों की दूसरों पर निर्भता बढ़ जाती है व कार्य क्षमता में कमी होने लगती है। तथा युवाओं द्वारा उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता है।

10.पारिवारिक एवं सामाजिक समस्या

जब वृद्धों को परिवार के सदस्यों द्वारा वृद्धाश्रम में या घर से अलग कर दिया जाता है। तो वे अकेलापन महसूस करतें हैं। लेकिन आज के पा"चात्य संस्कृति के कारण वृद्धों का अनादर देखने को मिलता है। वृद्धावस्था में व्यक्ति की अपने परिवार व बच्चों पर निर्भता ज्यादा होती है और इस समय युवा उन्हें अलग करने की रणनीति बनाने लगते हैं तब उनमें परावलम्बन की भावना की समस्या होने लगती है।

निवारण

वृद्धों की समस्याओं को दूर करने हेतु कुछ नीतियां बनायी गई है जैसे– वरिश्ठ नागरिक अधिनियम 2007 लागू किया गया है। यह अधिनियम माता–पिता के रखरखाव का प्रमुख दायित्व उनके बच्चों, पोते, पोतियों व उनके रि"तेदारों को देता है। जो संभवत: वरिश्ठ नागरिकों की संपत्ति का अधिग्रहण करेंगे। ''माता–पिता और वरिश्ठ नागरिकों का भरण पोशण तथा कल्याण (सं"ोधन) विधेयक'' 2016। यह अधिनियम माता–पिता और वरिश्ठ नागरिकों का भरण–पोशण तथा कल्याण अधिनियम 2007, को माता–पिता और वरिश्ठ नागरिकों के भरण पोशण और कल्याण के लिए संविधान के अंतर्गत प्रत्याभूत और मान्यता प्राप्त व अधिक प्रभावकारी उपबंधों का प्रावधान करने हेतु अधिनियमित किया गया था। तथापि परिवारों के सदस्यों द्वारा वयोवृद्धों की घोर उपेक्षा करने या उनका परित्याग करने के हजारों मामलों की सूचना प्रतिदिन मिलती रहती है।

दिव्यांग व्यक्ति

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''मन की बात'' संबोधन में विकलांग भाब्द के स्थान पर 'दिव्यांग' भाब्द के प्रयोग करने का आग्रह किया। तभी से दिव्यांग भाब्द का प्रयोग किया जाने लगा। सामान्य अर्थों में विकलांगता ऐसी भाारीरिक एवं मानसिक अक्षमता है। जिसके चलते कोई व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों की तरह किसी कार्य को करने में अक्षम होता है। तकनीकि दृश्टि से विकलांगता एवं विकलांगता संदर्भ वाले भाब्द हैं। भारत में ऐसे व्यक्ति को विकलांग माना गया है जो चिकित्सा अधिकारी द्वारा प्रमाणित 40 प्रति"ात से कम विकलांगता का ि"ाकार न हो। वि"व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक जहां वि"व की 15 पति"ात आवादी किसी न किसी रूप में विकलांगता से पीड़ित हैं। वही भारत की महज 2.21 प्रति"ात आबादी ही विकलांगता से पीड़ित है। आंकड़ों की ये विसंगति विकलांगता के लिए तय मानकों में भिन्नता के कारण है।

समस्याएं

विकलांग जनों का आर्थिक पुनर्वास उनके सामाजिक पुनर्वास की प्राथमिक भार्त है। जबकि विकलांगों का चिकित्सीय एवं भौक्षिक पुनर्वास का माध्यम है। और उनमें स"ाक्तिकरण के लिए अति आव"यक भी है।

सरकार द्वारा प्रयास

दिव्यांग जनों हेतु सरकार द्वारा निम्न प्रयास किये गये हैं–

1.भारतीय पुनर्वास परिशद अधिनियम, 1992

2.विकलांग जन (समान अवसर, अधिकारियों का संरक्षण और पूर्व भागीदारी) अधिनियम, 1995

3.ऑटिज्म, सरेब्रल पॉलसी, मानसिक बीमारी और बहुविकलांगों के कल्याण के लिए राश्ट्रीय व्यास अधिनियम, 1987

4.मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 1987

निश्कर्श

अतंतः हम यह कह सकते हैं कि वद्धों एवं दिव्यांगों की उपरोक्त समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार के प्रयास तो यथोचित है। परन्तु समाज के लोगों की वृद्धों एवं दिव्यांगां के प्रति संवेदन"ीलता कम होती जा रही है।

सुझाव

अत हम सबकी यह जिमेदारी बनती है कि वे इनमें समस्याओं को अपने स्तर स भी दूर करने का प्रयास करें। वृद्धों को परिवार में सम्मान व आदर मिले उनका ध्यान रखा जाये साथ ही दिव्यांगों को भी मानसिक स्थिति को बनाये रखने का प्रयास किया जाये।

सन्दर्भ सूची–

1-www.prawakla.com

2-https://www.bbc.com

3-m.jagrsn.com

4-Gaur Saraswat Smt. Abhilasha, Jeevan Awadhi Vikssh, Star Publicalions, Agra.

5-deshbandu.co.in